NIOS DLED

SECOND SEMESTER SOLED ASSIGNMENT
BY NIOS GURU AJAY ANURAGI

MODULE -508

प्रारंभिक स्तर पर कला, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा तथा कार्य शिक्षा सीखना
Heart health and physical and work education at elementary level

NIOS GURU AJAY ANURAGI

सत्रीय कार्य -1
Assignment -1

Question 1- विद्यालय में दैनिक शिक्षण अधिगम में कला शिक्षण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है दृश्य एवं निष्पादन कला के एक एक क्रियाकलाप का चयन करके इस कथन की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए?

Ans - कला शिक्षण -

कला शिक्षा अधिगम का एक प्राथमिक रास्ता है , सौन्दर्य परक अनुभव के लिए शिक्षण के अर्थ के खोज की एक यात्रा है । कला मानवीय और आविष्कार द्वारा सृजित विचारों कल्पना , कौश को एक अभिव्यक्ति है । एक कहावत है " संगीत क्या है पसंदीदा आवाजों की अनुभूति । " उसी प्रकार यह अन्य कला रूपों पर लागू होता है । गति मनोभाव व्यक्त करता है , आवाज अनुकूलन स्वयं को रास्ता दिखाता है , मस्तिष्क की आन्तरिक सतहों को प्रकट करता है । मूर्तिकला स्वयं को प्रतिबिम्बित करता है - यही कला शिक्षा है । हमारे लिए कला शिक्षा को जरूरत क्यों है ? कला शिक्षा अधिगम का एक क्षेत्र है जो इन पर आधारित है ।

• दृश्य , स्पर्शनीय कला

• निष्पादन कला

दैनिक शिक्षण अधिगम में कला शिक्षक की भूमिका-

1.यह बच्चों को संरचित पाठों की अपेक्षा अधिक सृजनात्मक तरीके से सीखने की अनुमति देता है ।
2.गलती होने का भय नहीं है ।
3. यहाँ उन्हें बिना भयभीत हुए इधर उधर के काम करने की स्वीकृति है ।
4 . यह स्व विश्लेषण , स्वसम्मान और स्व अनुशासन के स्तर को भी बढ़ाता है । कुछ बच्चे दूसरों की अपेक्षा अधिक प्रेरित होते हैं और स्वेच्छा से अधिक सहयोग देते हैं ।
5 . यह व्यवहारिक अभिरूचि को विकसित करता है और चिन्तन को सुसाध्य बनाता है ।
6 सभी योग्यताओं रंग और लिंग के लोग कला कार्य से जुड़े हैं । कला जाति , मत धर्म और राज्य , राष्ट्र तथा भाषा की सीमाओं से मुक्त होता है ।
7. यह न केवल अच्छी रूचि और सुंदरता की परख कराता है बल्कि यह आन्तरिक ऊर्जा को सृजनात्मक योग्यताओं में भी प्रवर्तित करता है ।
8 . एक कलाकार अपनी आवाज नहीं उठाता , संदेश प्रसारित करने के लिए उसकी कला की अभिव्यक्ति ही काफी है । ऊर्जा को सकरात्मक अभिव्यक्ति में निर्दिष्ट करने के लिए यह एक आश्चर्यजनक हथियार है ।
9 . अधिगम के लिए मनोभाव को नेतृत्व प्रदान करने में कल्पना और उच्चतर अभिव्यक्ति सकरात्मक शैक्षिक मिलन का अवसर सृजित करते हैं ।
10 . एक कवि , नर्तक दृश्य कलाकार , एक जादूगर के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्यात्मक अनुभूति चिन्तन प्रक्रिया में एक वास्तविक पुनर्जागरण लाने के लिए अधिगमकर्ता के ध्यान को शामिल करती है ।

दृश्य क्रियाकलाप-

उदाहरण - उनके आस पास कला के संसार की खोज

विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए प्रारूपित किया गया है कि दृश्य कला अपने बहुत से रूपों में जीवन का एक अंग है । कला का अस्तित्व उनके निकटस्थ परिवेश में है । लोग जो दृश्य चित्रों के साथ काम करते हैं उनमें रंगसाज , रजाईसाज दर्जी , सिरेमिक कलाकार कपड़ों के नमूने विकसित करने वाले अभिकल्पक , शिल्पकार , वास्तुविद , शहरों की योजना बनाने वाले , सड़क किनारे के होर्डिंग बनाने वाले कलाकार और अन्य दूसरे । शामिल हैं । ये दृश्य प्रभाव उस समुदाय को संस्कृति और युगों से कला के विकास को प्रदर्शित करते हैं । मान लो हम मृदभाण्ड की एक गतिविधि चुनते हैं जो कि शहर या गाँव के अन्दर एक शिल्पी के द्वारा किया जाना है । शिल्प के बारे में अधिक जानकारी में पुस्तकालय की पुस्तकें उनकी सहायता करती है । उन्हें स्वयं के छोटे बर्तन बनाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए ताकि अपेक्षित कौशलों का बेहतर अनुभव पा सकें । उन्हें स्वयं की दीर्घा सृजित करने के लिए कैमरे से विडियो बनाना या तस्वीर खींचनी चाहिए यह उन्हें समस्त प्रक्रिया की जानकारी भी देता है कि कैसे स्वयं के बर्तन बनायें । यह उनके आसपास के सौन्दर्य की समझ और उनके सांस्कृतिक मूल्यों के सशक्तिकरण में सहायता करता है । मृदभाण्ड पर कार्यशाला आयोजित करने के लिए आप एक स्थानीय कुम्भकार को भी निमंत्रित कर सकते हैं । अपने स्वयं के प्रारूप और नक्काशी बनाने या पेन्ट करने की कोशिश करें ।

निष्पादन कला-

उदाहरण- नाटक (Drama) का संसार

NIOS GURU AJAY ANURAGI

विविध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कालों के दैनिक जीवन को समझने में नाटक की भूमिका घ के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता विकसित करने में सहायता करने के लिए इस इकाई को प्रारूपित किया गया है ।नाटक को दैनिक जीवन के अंग तथा संस्कृति और समुदाय की अभिव्यक्ति के रूप में देखने में विद्यार्थियों की योग्यता पर केन्द्रित है ।

A . विचार और प्रेरणा अन्त :

नाटकों के लिए विचार कई साधनों से आ सकते हैं ।
- कल्पना ,
-पर्यावरण
-वैयक्तिक अनुभव
-इतिहास /साहित्य
-तस्वीरें , चलचित्र
मीडिया नाटक का अभ्सास अभिव्यक्तिपूर्ण अभिनय , मुखौटों के माध्यम से अभिव्यक्ति , वृतान्त . विविध गति संचालनों आदि विभिन्न तरीकों से किया जाता है

B . मुखौटा जादू (मुखौटा से , मुंह या समस्त चेहरा ढका हो सकता है) -

मुखौटा एक मजाकिया गतिविधि है और फिर भी बहुत से पहलुओं को सम्प्रेषित करता है । यह प्रतीकात्मक चरित्र सृजित करता है । उदाहरणार्थ नीला शरीर और मोर पंख के साथ भगवान कृष्ण , दस सिरों के साथ रावण या कोई जनजातीय अभिव्यक्ति । जिस क्षण बच्चा मुखौटा पहनता हैं वो रूपान्तरित हो जाते हैं , अभिनय करना शुरू कर देते हैं , कल्पना , संवाद सृजन , संचालन और क्रमश : चरित्र की वास्तविकता का अनुभव करने लगते हैं । एक छोटा सा समर्थन और सूचना बच्चों को वस्तुओं को समझने में प्रमाणिक सहायता करता है ।

C , साहित्य को जवाब :

ऐतिहासिक तथ्यों महत्वपूर्ण लोक कहानियाँ , समकालीन सामाजिक घटनायें आदि अभिनीत की जा सकती हैं ।

D . वस्तुओं की समझ बनाना

यह इस पर केन्द्रित है कि विद्यार्थियों के अपने नाटकके विचार कहाँ से आते हैं । और कैसे वे अपने कार्य को विकसित और प्रस्तुत करते है। विद्यार्थी जब एक नाटक का सृजन करते हैं " तो बनाये हुए महत्वपूर्ण विकल्पों को देखना शुरू कर देते हैं ।

Question 2- निष्पादन कला क्रियाकलापों को प्रभावी बनाने के लिए योजना तैयारी मात्र भूमिका निभाते हैं। इस कथन पर विवेचना कीजिए?

Ans- निष्पादन कला क्रियाकलापों को प्रभावी बनाने के लिए योजना व तैयारी की भूमिका-

A-योजना-

1. प्रसंग का चुनाव विषय के अनुरूप होना चाहिए कला रूपों का चुनाव करते समय हमें विषय के लक्ष्य एवं उद्देश्य के प्रति जागरूक होना चाहिए । यह अवसर की जरूरत से सह संबंधित होना चाहिए ।
2 कला रूप की सूचना प्रामाणिक होने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है जो कि विभिन्न संसाधनों से एकत्रित की जा सकती है । सूचना एकत्र करने और देने की इस प्रक्रिया में अभिभावक , समुदाय , पुस्तकें इंटरनेट

NIOS GURU AJAY ANURAGI

, अन्य क्षेत्रों के लोग विद्या आदि को सम्मिलित किया जा सकता है । विद्यार्थियों के लिए यह अच्छा अन्वेषण हो सकता है जो कि उन्हें एक जीवनपर्यन्त अधिगम अनुभव देगा ।
3 . यह मस्तिष्क में रखना चाहिए कि निष्पादन किसके लिए प्रायोजित हो रहा है । कला रूपों का चुनाव करते समय दर्शकों के दृष्टिकोण और गुणवत्ता को मस्तिष्क में रखना होता है ।
4 . नियमित विद्यालय पाठ्यचर्या में स्थान की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए तिथि एवं समय का निर्धारण होता है । विद्यालय कार्यक्रम जैसे परीक्षा , छुट्टियों को जानना अनिवार्य
5 विषय की स्थिति , मंच या परिवेश के स्थान का निर्णय कोष की उपलब्धता , पहुंचने में आसानी , दर्शक के लिए स्थान (उत्सव , वार्षिकोत्सव आदि) , विषय का स्तर विद्यालय स्तर , अन्तर्विद्यालयी स्तर , राज्य स्तर आदि) के आधार पर होता है ।
6. विषय के आयोजन में विभिन्न मदों के अंतर्गत कोष का आवंटन और वितरण एक निर्णायक भूमिका अदा करता है ।
7 . विद्यालय में भागीदारी अधिकतम होनी चाहिए क्योंकि सम्मिलन प्रत्येक बच्चा को उत्प्रेरित करता है । कक्षाकक्ष , प्रेक्षागृह , समुदाय भवन आदि सभी समय उपयोग में लाये जा सकते है । निष्पादन के लिए समूहों में योजना और समायोजन ऐसे विषयों में सहायता करता है । प्रतियोगी निर्देशकों द्वारा स्थान और समय सभी परिकलित किये जाते हैं ।
8 , निष्पादन के लिए प्रयुक्त संगीत , कथालेखन और वाद्ययंत्रों को ऐसा होना चाहिए जो निष्पादन की जरूरतों को परिपूर्ण करता हो साथ ही साथ कला की प्रमाणिकता को बनाये रखता हो ।
9 निष्पादन के लिए वस्त्र और आभूषणों के चुनाव और निर्धारण में यह बहुत महत्वपूर्ण हैं ।
10 , कार्य के विभाजन और कर्तव्यों के हस्तातंरण का कार्यक्रम में विद्यार्थियों और स्टाफ सदस्यों की अधिकतम भागीदारी को स्वीकृत करना चाहिए विभिन्न क्षेत्रों में अधिक अन्वेषण और उनकी क्षमताओं के प्रदर्शन के लिए इसे उन्हें एक प्लेटफार्म भी देना चाहिए ।

B-तैयारी

1 . एक निष्पादन की तैयारी के लिए कार्य के विभिन्न स्तरों पर एक पूर्ण जागरूक टीम का होना महत्वपूर्ण है ।
2 . विद्यार्थियों का ध्वनि - परीक्षण और चयन निष्पादन की जरूरत के अनुसार होना चाहिए ।
3 . नियमित विद्यालय पर्यावरण को बाधित किए बगैर कथा , गीत संगीत , कठपुतली जैसे संवाद प्रेषण आवाज अनुकूलन शारीरिक गति संचालनों , मुद्राओं आदि के पूर्वाभ्यास के लिए समय का उचित प्रावधान और आवंटन होना चाहिए । ऐसे कार्यक्रमों में समय का व्यवस्थापन अपेक्षित है । ऐसे केसों में सत्र की शुरुआत से पहले , अग्रिम तैयारी लाभदायक सिद्ध होती है ।
4 मंच की बनावट विभिन्न निष्पादनों में प्रतिभागियों की संख्या के अनुसार होनी चाहिए । सीढ़ियों का प्रावधान मंच के दोनों किनारों पर होना चाहिए । मंच के पीछे उचित स्थान होना चाहिए ताकि प्रतिभागी आसानी से अपना स्थान ले सकें ।
5 . मंच का विन्यास , दर्शकों और निष्पादनकर्ताओं के बीच दृष्टि संयोजन का विस्तार देने वाला होना चाहिए ।
6 . ध्वनि - प्रणाली की व्यवस्था निष्पादन की जरूरतों जैसे बेतार माइक्रोफोन , मंच का माइक आदि के अनुसार होना चाहिए ।
7 . मंच की प्रकाश व्यवस्था निष्पादों की जरूरत के अनुसार व्यवस्थित होनी चाहिए । कला रूप के अनुसार मंच सज्जा और प्रदर्शन अग्रिम में स्थायी और प्राकृतिक कच्चे माल के प्रयोग से होनी चाहिए

NIOS GURU AJAY ANURAGI

8 . वस्त्र , आभूषण और सजावट स्वनिर्मित किराये पर या विद्यालय में पहले से उपलब्ध हो । सकती है । वस्त्र मौसम को ध्यान में रखते हुए प्रतिभागियों को सुरक्षा और आराम देने वाला होना चाहिए । गुणवत्ता जांच के पश्चात् ही मेक - अप किया जाना चाहिए । इस क्षेत्र में कोई समझौता नहीं करना चाहिए । शिक्षक को प्रतिभागियों को स्वय उनक मेकअप किट लाने को कहना चाहिए ।
9 .कला रूप की जरूरत के अनुसार उपकरण अग्रिम में तैयार होने चाहिए । ये गृहनिर्मित विद्यार्थियों और शिक्षकों की एक टीम द्वारा विद्यालय में निर्मित , यदि आवश्यक हो तो बाहर से लाया जाना चाहिए या किराये आदि पर ली जा सकती हैं । कला रूप के लिए उचित पर्यावरण बनाने के लिए पर्याप्त उपकरण होने चाहिए
10. कठपुतली के लिए मंच विन्यास कठपुतली के प्रकार जैसे रस्सी , छाया , दस्ताना आदि के अनुसार होना चाहिए । कठपुतलियां स्वनिर्मित हो सकती है या बनाने के लिए बच्चों के साथ कार्य करने के लिए विशेषज्ञों को बुलाया जा सकता है । हम एक कठपुतली शो में विविध प्रकार की कठपुतलियों का प्रयोग कर सकते है ।

सत्रीय कार्य 2
Assignment -2

NIOS GURU AJAY ANURAGI

Question 1- अर्थपूर्ण व सार्थक शारीरिक श्रम के परिप्रेक्ष्य कार्य शिक्षा की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।

Ans - कार्य शिक्षा की अवधारणा एवं अर्थ-

हर देश में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का विकास करना होता है । जो अपने नागरिकों को अपनी प्रतिभा और हुनर के विकास का मौका दे । जिनकी जरूरत उसे जीवन भर रहती है । इसके लिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि शारीरिक श्रम को शिक्षा से जोड़ा जाए यानी कि कार्य शिक्षा को भौक्षिक व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाया जाए । कार्य शिक्षा को उददे यपूर्ण और सार्थक शारीरिक श्रम माना गया है जो शिक्षण प्रक्रिया के अंतरंग भाग के रूप में औयोजित किया जाता है । यह अर्थपूर्ण सामग्री के उत्पादन और समुदाय की सेवा के रूप में परिकल्पित होता है जिसमें बच्चे आत्मसंतोश तथा आनंद का अनुभव साझा करते हैं। कार्य शिक्षा ज्ञान समझ , व्यवहारिक कौशल और मूल्यपरक जीवन क्रियाओं को भौक्षिक गतिविधियों में सम्मिलित करने पर जोर देती है । कार्य शिक्षा की अवधारणा को निम्नलिखित घटकों में बेहतर रूप से समझा जा सकता है

कार्य शिक्षा -

• हाथ और मरितष्क में समायोजन स्थापित करती है ,
• भौतिक क्रियाओं में अन्तर्निहित समाजोपयोगी शारीरिक श्रम हैं .
• सीखने की प्रक्रियाओं का अनिवार्य व महत्वपूर्ण घटक है समुदाय के लिए उपयोगी सेवाओं अथवा उत्पादक कार्य के रूप में परिलक्षित होती
• बहुस्तरीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के हर चरण में आवश्यक घटक के रूप में जुड़ी हुई । करने के द्वारा सीखने के सिद्धांत पर आधरित है ।

कार्य शिक्षा में अन्तर्निहित कार्य-

• समस्या समाधान , समालोचनात्मक सोच निर्णय लेना आदि कौशलों का विकास करते समी विशयों से जुड़े शिक्षकों की भागीदारी आमंत्रित करते है .
• विद्यार्थियों की आवश्यकताओं रूचियों व क्षमताओं पर आधारित होते हैं . शिक्षा के स्तरों (Sages) के अनुसार विद्यार्थियों की दक्षताओं में वृद्धि करते हैं . व्यक्तित्व के विकास में सहायता करते हैं ,
• व्यवसायिक तत्परता तथा उत्पादन संबंधी कुशलता में वृद्धि व विकास करते हैं । विविध प्रकार की युक्तियों , तकनीकों , उपकरणों व पदार्थों के साथ अन्तक्रिया के अवसर सुलभ कराते है ।

कार्य शिक्षा का महत्व-

1 . बच्चों में अपने शरीर की प्राकृतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नियमित आदतों और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है ।
2 अपने आसपास के परिवेश के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता उत्पन्न करना तथा मानव जाति और पर्यावरण के अन्तःसंबंध के प्रति समझ विकसित होती है ।
3. शारीरिक कार्य और श्रम के महत्व के प्रति समझ व सम्मान की भावना पैदा होती है ।
4. सामाजिक रूप से वांछनीय मूल्यों का विकास करने में मदद मिलती है । नियमितता समय की पाबंदी स्वच्छता , आत्मनियंत्रण परिश्रमशीलता कर्तव्यबोध सेवा भावना , उत्तरदायित्व की भावना उदयमशीलता समानता के प्रति संवेदनशीलता भाई चारे की भावना इन सभी गुणों का विकास मात्र किताबें पढ़ने या प्रवचन सुनने से नहीं होता बल्कि जब विद्यार्थी मिलजुल कर भिन्न - भिन्न प्रकार के कार्यकलाप करते हैं । तब स्वत : उनके अंदर सामाजिक रूप से वांछनीय गुण पल्लवित होते हैं ।
5 कार्य शिक्षा के माध्यम से पोशण आहार संक्रामक रोग स्वच्छता संबंधी नियमों की जानकारी मिलती है । कार्य जरिए वे सामुदायिक स्वच्छता बनाए रखने के प्रति के सचेत व सजग होते हैं ।
6. स्वअभिव्यक्ति और रचनात्मकता के गुण का पोशण - प्रत्येक बच्चे में स जन की पर्याप्त संभातनाएँ होती हैं और कलात्मक अभिव्यक्ति उसका स्वाभाविक लक्षण है । कार्य शिक्षा कलात्मक कार्यकलापों का आयोजन करके व्यक्तिगत आधार पर आत्म अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है ।
7 . सांस्कृतिक विरासत स्थानीय व राष्ट्रीय दोनों की सराहना करने की क्षमता तथा संरक्षण की भावना को पोशित करती है ।
8 . नेतृत्व की भावना व नेतृत्व कौशल को स्फुटित करने में सहायता करती है । कुछ बच्चे स्वभावतः अन्तर्मुखी होते हैं , पहल करने से झिझकते हैं । कार्य शिक्षा बच्चों को इस तरह के अनुभव प्रदान करती है जिससे सरल से कार्यकलापों के द्वारा उनमें नेत त्व कौशल को विकसित व पोशित किया जा सके ।
9 . आवश्यक जीवन कौशलों का विकास शिक्षा का वास्तविक एवं आदर्श दायित्व है कि वह बच्चों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करे । कार्य शिक्षा विद्यार्थी में आवश्यक जीवन कौशलों यथा - समस्या समाधान , निर्णय लेना सृजनात्मक सोच समालोचनात्मक सोच तदानुभूति , प्रभावी संप्रेशण स्वयं की पहचान जैसे कौशलों का विकास करने में मदद करती है और बच्चों को दैनिक जीवन की मांगो और चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निबटने के योग्य बनाती है ।
10 . कार्य जगत से शिक्षा की सम्बद्धता स्थापित करना - कार्य शिक्षा समुदाय की विभिन्न कार्य परिस्थितियों को जानने और उनमें हिस्सा लेने के अवसर प्रदान करती है ।

NIOS GURU
AJAY ANURAGI

Question 2- कार्य शिक्षा से संबंधित क्रियाकलापों में विद्यार्थियों का समूहीकरण व समय निर्धारण एक सशक्त भूमिका निभाते हैं। इस कथन को स्पष्ट करें।

Ans. विद्यार्थियों का समूहीकरण

विद्यार्थी अपने विचारों एवं कल्पनाओं को एक आकार प्रदान करते , तब वे खुशी का अनुभव करते हैं और जब वे समूहों में कार्य करते हैं तब -

• उनके अधिगम प्रक्रिया द्वारा प्राप्त आनंद की अनुभूति में सकारात्मक व द्धि होती है ;

• वे समूह भावना का विकास करते हैं ;

• वे एक - दूसरे से सीखने और सिखाने का कौशल करते हैं ;

• सहयोग , नेतृत्व जैसे गुणों का स्वत विकास होता है ।

कार्य शिक्षा के अधिकांश कार्यकलापों की प्रकृति मुख्यतः इस प्रकार की होती है कि उन्हें यदि समूह में करवाया जाए तो बेहतर परिणामों की प्राप्ति सम्भव है । दृष्टिकोण निर्माण से संबन्धित गुण मूल्य व कौशल और कुछ अन्य सामाजिक मूल्य जैसे एक दूसरे के प्रति व परिवेश के प्रति संवेदनशीलता परानुभूति , सहयोग अन्त निर्भरता के प्रति समझ , प्रकृति प्रेम , सौन्दर्यानुभूति . श्रम का महत्व , नियमितता आदि समूह में कार्य करने अधिक मुखरित रूप से विकसित होते हैं । समूहों में काम करने से एक सांझी संरकृति का माहौल भी विकसित होता है । उपरोक्त सकारात्मक पक्ष तभी उभर सकते हैं जब आपने योजनाबद्ध तरीके से विद्यार्थियों के समूहों का निर्माण किया हो । समूह निर्माण हेतु आप कुछ विशेष बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहेंगे - क्या आप एक ही कक्षा के भिन्न - भिन्न समूह बना रहे हैं या दो - तीन कक्षाओं को मिलाकर विद्यार्थियों के समूह बना रहे है ? कार्यकलाप विशेष के उद्देश्यों को दृष्टिगत करते हैं दोनों ही स्थितियाँ आपके सामने होंगी । कुछ कार्यकलापों के लिए आप कक्षानुसार समूह बनवाएँगे और कुछ कार्यकलापों के लिए भिन्न भिन्न कक्षाओं के मिले - जुले समूह जैसे बालसभा प्रातःका कालीन सभा के आयोजन के लिए सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों की भागीदारी । दोनों ही स्थितियों में आप विचार करें

• सहशिक्षा होने पर मिला - जुला समूह बनाए । शारीरिक चुनौती वाले बच्चों का पृथक समूह न बनाकर और बच्चों के समूह के साथ जोड़े और यह भी सुनिश्चित करें कि वहां उन्हें कोई अर्थपूर्ण भूमिका और उत्तरदायित्व दिया जाए सभी कुशाग्र व तीव्र गति से सीखने वाले बच्चों को एक साथ न रखें । कहने का तात्पर्य यह है कि मंद गति से सीखने वाले बच्चों व मेधावी बच्चों का मिला - जुला समूह बने । ऐसे समूहों के निर्माण से आपका उत्तरदायित्व आरम्भ में कुछ बढ़ जाएगा ।

आपको सतत् रूप से इस बात का अवलोकन करना है कि मेधावी / अधिक वय वाले तीव्र गति से सीखने की क्षमता रखने वाले बच्चे दूसरे बच्चों को दबाए नहीं , उनकी बराबर की भागीदारी ले उन्हें भी निणर्य लेने के अवसर दें , उनके निर्णयों व सुझावों को सुना जाए समझा जाए और आवश्यकतानुसार क्रियान्वयन भी किया जाए । कहने का तात्पर्य यह है कि समूहों में प्रजातान्त्रिक माहौल बनें इसके लिए आरम्भ में आप की ओर से अधिक समय निवेश करने की मांग उत्पन्न होती है ।

- आपके समूह निर्माण की प्रक्रिया को कुछ और घटक भी प्रभावित करेंगे

• स्थान की उपलब्धता

• संसाधनों - सामग्री व उपकरण , औजार आदि की पर्याप्तता ;

• समय की उपलब्धता पर्यवेक्षण व मूल्यांकन की व्यवस्था ,

समय निधारण-

कार्य शिक्षा के अन्तर्गत गतिविधि की प्रकृति , उद्देश्य और उसके आधार पर प्राप्त होने वाले अपेक्षित परिणामों की प्रकृति के आधार पर प्रत्येक गतिविधि का समय निर्धारित किया जा सकता है । यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक गतिविधि के समस्त सोपान विद्यालय में ही सम्पन्न करवाए जाएँ । कुछ ऐसे भी कार्यकलाप हो सकते हैं जिनका प्रथम सोपान विद्यालय में अध्यापक के प्रदर्शन से आरम्भ हो , तत्पश्चात् विद्यार्थी घर समुदाय में जाकर अपनी - अपनी सुविधानुसार उस प्रक्रिया का अनुभव करें । समय के संबंध

NOS GURU AJAY ANURAGI

में महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है - कौन सा कार्य कलाप सत्र / वर्ष के किस समय करना है । इस बिन्दु का निर्धारण कार्यकलाप की प्रकृति विद्यालय व समुदाय की आवश्कता पर निर्भर करेगा । कार्य शिक्षा अध्यापक होने के नाते आप योजना बना सकते हैं कि इस माह अर्थात् प्रवेश प्रक्रिया के दौरान विद्यालय में क्या - क्या अतिरिक्त कार्यकलाप होने चाहिए और उनमें से कौन से कार्यकलाप कार्य शिक्षा कार्यक्रम क अंग बन सकते हैं

1 . विद्यालय की पोशित बस्तियों (जहां से बच्चे दाखिले के लिए विद्यालय आते है) में विद्यालय के दाखिले सम्बन्धी नियमों की जानकारी व्यक्तिगत संपर्क द्वारा डुगडुगी पिटवा कर माता - पिता की नुक्कड़ बैठक आमन्त्रित कर दी जा सकती है ।

2 . प्रवेश के समय विद्यालय में कुछ विशेष प्रबन्ध करने होते हैं जैसे विद्यालय के मुख्य द्वार पर दिशा निर्देश देने संबंधी कार्य अभिभावकों के बैठने का प्रबंध निरक्षर माता - पिता द्वारा प्रवेश पत्र न भर पाने की स्थिति में उनका प्रवेश पत्र भरने में मदद करना , सभी के लिए पेयजल की व्यवस्था करना आदि । यह भी कार्य शिक्षा कार्यक्रम के कार्यकलापों की सम्भावना खोजी जा सकती है ।

3 . अप्रैल माह के पश्चात् मई व जून ग्रीष्म अवकाश का समय होता है , आप योजना बना सकते हैं कि मौसम को देखते हुए विद्यार्थियों को कोन - से कार्य दिए जाए । बीजों का संग्रह पत्तियों का संग्रह आम की गुठली से पपीहा बनाना आम का पना बनाना , आम की किस्में जानना अवकाश के किसी भी दस दिन की डायरी लिखना , टूटी - फूटी वस्तुओं का संग्रह करना आदि कार्यकलाप घर पर करने के लिए दिए जा सकते हैं ।

4 . ग्रीष्म अवकाश के पश्चात् माह जुलाई में विद्यालय पुनः खुलते हैं । अब आपके पास जुलाई के मौसम व विद्यालय की गतिविधियों को देखते हुए अनेक कार्यकलाप है , आप कक्षा विशेष के विद्यार्थियों की शारीरिक – मानसिक क्षमता के अनुसार कोई भी कार्यकलाप चुन सकते हैं नव आगन्तुक स्वागत समारोह का आयोजन नए विद्यार्थी अभी भी प्रवेश ले रहे होंगे उन सभी के स्वागत को अनौपचारिक रूप दिया जा सकता है ।

5 . जुलाई माह में आम तौर पर बारिश होती है । आप स्थान की उपलब्धता को देखते हुए कृषि संबंधी कार्य भी करवा सकते हैं । इसके अतिरिक्त बारिश के बाद सीलन से बचने के उपाय दालों का भण्डारण , कपड़ों की सुरक्षा पर भी कोई गतिविधि सोची जा सकती है । जुलाई में ही 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस होता है । इसक दिवस के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अनेक कार्यकलाप हो सकते हैं जैसे

- जागरूकता रैली , प्रभात फेरी नुक्कड़ नाटक व सभाओं का आयोजन ।
- जनसंख्या सम्बन्धी नारे लिखवाना ।

6 . अगस्त माह स्थानीय व राष्ट्रीय पर्वो का माह होता है । पों की प्रक ति के अनुसार राखी बनाना , झंडे बनाना सांस्क तिक कार्यक्रमों का आयोजन आदि कार्यकलापों के बारे में विचार किया जा सकता है ।

NIOS GURU
AJAY ANURAGI

सत्रीय कार्य -3

Assignment -3

Question 1- स्वास्थ्य पूर्ण विद्यालय पर्यावरण के मुख्य घटक कौन कौन से हैं?इष्टतम अधिगम के परिप्रेक्ष में किन्ही दो घटकों की उपयोगिता को स्पष्ट करें।

Ans- स्वास्थ्य पूर्ण विद्यालय पर्यावरण के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं-

1. स्वच्छ पेयजल आपूर्ति
2. स्वच्छ शौचालय एवं मंत्रालय
3.सुरक्षित आहार
4.हाथ धोने की सुविधा
5. अप वाहन तंत्र (जल निकासी प्रणाली)
6. कचरा निस्तारण
7. प्रकाश व्यवस्था
8.वायु संचार
9.बैठने की आराम दे व्यवस्था
10. प्रेरक संवेदनात्मक एवं सामाजिक वातावरण

स्वच्छ शौचालय एवं मंत्रालय-

बच्चों को स्वास्थ्य के महत्व के बारे में सीखने के लिए विद्यालय केंद्र है विद्यालयों में आवश्यक सफाई की सुविधायें उपलब्ध होनी चाहिए । इस सम्बन्ध में विद्यालय सत्ता और शिक्षकों की सार्थक भूमिका निभानी है ।

(a) विद्यालय सत्ता की भूमिका

• सह शिक्षा विद्यालयों में लड़कियों के लिए पृथक शौचालय हो । ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को उत्पीड़न , जानवरों के आक्रमणों आदि से जोखिम मुक्त सुविधायें अवश्य प्राप्त हो । उपयुक्त लॉक (ताला) हो । (बोल्ट और हैन्डल)

• पूर्व प्राथमिक एंव लड़कियों के सम्बन्ध में परिचारक द्वारा पर्यवेक्षण सफाई व्यवस्था को भूजल को संदूषित नहीं करना चाहिए । शौचालय एक दिन में दो बार साफ होने चाहिए । शौचालय एवं मूत्रालय विकलांग बच्चों के अनुकूल होने चाहिए जिसमें हैण्डल एवं रैम्प उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था एवं वायु संचार होना चाहिए , जल आपूर्ति पर्याप्त होनी चाहिए . शौचालय की सफाई का नियमित मॉनीटर होना चाहिए।

(b) शिक्षक की भूमिका- शिक्षकों द्वारा नियमित तौर पर शौचालय एवं मूत्रालय से संबडित शिष्टाचार सिखाये जाने चाहिए जैसे दरवाजा अच्छी तरह बन्द करें ।

• सफाई के लिए पानी का प्रयोग करें
• अपशिष्ट पदार्थ कूड़ेदान में डालें
• यदि प्रयोग में न हो तो बिजली बन्द करें
• हाथ साबुन , कीचड़ या राख से धोयें ।

(c) पानी बर्बाद न करें दूसरों के लिए कभी भी आतंक पैदा न करें यदि अन्य केबिन प्रयोग में न हो तो बाहर से बन्द न करें शौचालय एवं मूत्रालय का हमेशा उचित प्रयोग करें

(d) बैठने की आरामदेह व्यवस्था -अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कक्षा में बैठने की आरामदेह व्यवस्था की जानी चाहिए प्रत्येक बच्चे को सुखद एवं सुगम होने के लिए शिक्षक अपना सर्वश्रेष्ठ

NIOS GURU AJAY ANURAGI

दे सकता है । प्रारंभिक कक्षाओं में की जाने वाली गतिविधियों जैसे समूह कार्य विचार विमर्श , लेखन कार्य , निष्पादन कला आदि के अनुसार । बैठने की भिन्न व्यवस्थायें होनी चाहिए । विकलांग बच्चों के बैठने की व्यवस्था के प्रति शिक्षक को अधिक सजग होना चाहिए यदि शिक्षक के पास विकलांग या दृष्टि बाधित छात्र हैं तो उसे तनुसार व्यवस्था करनी चाहिए ।
बैठने की व्यवस्था इस प्रकार है :
1 . समूह कार्य बैठने की व्यवस्था खण्ड या समूह में होनी चाहिए ।
2 . समूह विचार विमर्श शिक्षक को प्रत्येक बच्चे के समक्ष होना चाहिए ।
3 . लेखन कार्य प्रत्येक बच्चे को श्यामपट स्पष्ट दिखना चाहिए ।
4 . निष्पादन कला - बच्चों को पर्याप्त स्थान देना चाहिए ।
5 . विकलांग बच्चे - दरवाजे के पास बैठने चाहिए .
6. समस्या पैदा करने वाले शिक्षक के पास बैठने चाहिए ताकि उनकी गतिविधियाँ मॉनीटर हो सके ।
7 . मूल्यांकन - बच्चों को मॉनीटर करने के लिए शिक्षक के पास अधिकतम स्थान होना चाहिए ।
शिक्षक को सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके पास कक्षा को समायोजित करने के लिए पर्याप्त सीटें हो।

Question 2- शारीरिक शिक्षा की पाठ योजना बनाने के सिद्धांत कौन-कौन से हैं? व्याख्या कीजिए।

Ans. पाठ - योजना के सिद्धान्त-

शारीरिक शिक्षा पाठ निश्चित आधारभूत सिद्धान्तों के अनुसार नियोजित होते हैं जो गतिविधियों के एक समूह से दूसरे में परिवर्तित हो सकते है : उदाहरण के लिए व्यायाम और एथलेटिक । जबकि सभी पाठों के लिए निम्नलिखित सिद्धान्त सर्वसामान्य है :

1 . उत्साह बढ़ाना : - किसी भारी या प्रबल गतिविधि को शुरू करने से पहले कक्षा का पूर्णतया उत्साह बढ़ाना जरूरी है । उत्साह बढ़ाने के अभाव में मांसपेशियों की चोट पहुँचने की संभावना है । उत्साह बढ़ाने के क्रम में दौड़ना , उछलना , रस्सी कूदना और टहलना हो सकता है !

2 . सुव्यवस्थित विकास : - सुव्यवस्थित विकास को सुनिश्चित करने के क्रम में शरीर के सभी अंगों के समान अभ्यास के लिए पाठ अवश्य दिया जाना चाहिए सभी बड़ी और छोटी मांसपेशियों को भुजाओं पैरों गर्दन और धड़ के लिए विभिन्न व्यायामों की सहायता से प्रयोग में लाया जाता है । इसके माध्यम से संतुलन , दक्षता , ताकत समन्वय और गति विकसित किये जाते हैं ।

3 . आयु और लिंग : - गतिविधियां विद्यार्थियों की आयु और लिंग को ध्यान में रखकर चयनित की जानी चाहिए । छठीं कक्षा के लिए व्यायाम , नवीं कक्षा के लिए व्यायामों से बिल्कुल भिन्न होने चाहिए । लड़कियों के लिए व्यायाम विषय और प्रकार में भिन्न होने चाहिए क्योंकि वे अधिक समय तक निष्पादन करने में कठिन हो सकते हैं । लड़कों के लिए शारीरिक व्यायाम सख्त और कठिन हो सकते हैं ।

4 . प्रगति : - एक पाठ के प्रारंभ में अचानक कठिन व्यायामों का निष्पादन करना एक विद्यार्थी के लिए असंभव है । पाठ कोमल व्यायामों से प्रारंभ होना चाहिए धीरे - धीरे कठिन व्यायामों में बदलना चाहिए । व्यायामों की व्यवस्था में एक उपयुक्त क्रम होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों के बीच कठिनाई के आधार पर गतिविधि के किसी चरण पर कुण्ठा की अनुभूति न हो ।

5 . व्यायाम की पुनरावृत्ति : - एक व्यायाम केवल एक बार करने से कोई विकासात्मक मूल्य नहीं होगा । यह एक निश्चित अवधि के लिए बार - बार किया जाता है । अवधि का विस्तार या आवृत्ति की संख्या व्यायाम की प्रकृति और उद्देश्य पर निर्भर हो सकता है जिसके लिये यह पाठ - योजना में स्थापित किया

NOS GURU AJAY ANURAGI

गया है । सामान्य व्यायाम के लिए कम दुहराव जरूरी होता है । जबकि जटिल व्यायामों के लिए अधिक दुहरावों की अपेक्षा होती है ।

6 . पाठ की निरंतरता : - एक बार जब पाठ शुरू होता है तो यह अन्त तक बिना बाधित हुए जारी रहना चाहिए । यदि बाधा आती है और शरीर को गतिविधि की परिशुद्धि , ताकत और लय को ठंडा होने को बाध्य करता है तो यह विपरीत प्रभाव डालेगा ।

7 . लचीला बनाना : - व्यायाम के पश्चात् शरीर को सामान्य स्थिति में लाया जाता है लेकिन सहसा नहीं बल्कि कोमल व्यायामों के द्वारा । अंगों को हिलाने , तानने सिर को घुमाने लम्बे श्वसन जैसे व्यायाम और अन्य अधिक व्यायाम इस उद्देश्य के लिए अच्छे हैं । शारीरिक और मनोवैज्ञानिक कारणों के लिए लचीला बनाना आवश्यक है ।

SUBSCRIBE , LIKE & SHARE

MUST COMMENT

NIOS GURU

WHATSUP ONLY- 8707424046

NIOS GURU
AJAY ANURAGI